# तृतीय अध्याय

यात्रा वृत्त और हिन्दी साहित्य एवं अन्य समान धर्मी विधाएं
संस्मरण एवं रिपोर्ताज , रेखाचित्र, यात्रा एवं संस्मरण
डायरी, आत्म कथा, जीवनी.

4- यात्रावृत्त और हिन्दी साहित्य एवं अन्य समानार्थी विधाएँ :-

विधा :-

आधुनिक हिन्दी साहित्य में अनेक विधाओं के उदय के अन्य कारणों का अन्य विधाओं के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन किया जा सकता है । साहित्य साहित्यकार के जीवन पर प्रतिक्रिया की अभिव्यक्ति है। साहित्यकार अपनी अनुभूति को प्रकृति तथा अभिरुचि के अनुसार विभिन्न रूप देते हैं। साहित्य की अभिव्यक्ति के रूपों को विधा भी कहते हैं। अत: विधा वह विधि है, जिसमें साहित्यकार अपने अनुभव को वाणी देता है। अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है। भाषा साहित्यकार की रुचि और प्रकृति से प्रभावित होकर जीवन का आभास देने वाला कोई रूप धारण करती है।

आधुनिक काल के पूर्व हिन्दी साहित्य के रीति काल में, केवल कविता का प्रचलन था। कविता में भी तब प्राथमिकता मुक्तक काव्य को मिली। आधुनिक काल में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं पहचान कर तदनुसार अनेक विधाओं के पल्लवन में योगदान किया यह धारा उत्तरोत्तर विकसित होती गयी, और इस शताब्दी के चौथे दशक में उसे प्रौढ़ता प्राप्त हुई आज हिन्दी की नवीन विधाएं निम्न हैं। निबन्ध (ललित) निबन्ध (आलोचनात्मक) गद्य काव्य, जीवनी, यात्रा-वृतान्त, आत्मकथा (कल्पित) एकांकी, उपन्यास, कहानी, संस्मरण, डायरी , रेखाचित्र, रिपोर्ताज, इण्टरव्यू, पत्र-लेखन, विचार कथा आदि ।

1- संस्मरण एवं रिपोर्ताज :- यात्रा-वृत्त एवं अन्य विधाओं में पर्याप्त साम्य भी है। जैसे - उद्देश्यों में अन्तर होते हुए भी यात्रा-वृत्त और रिपोर्ताज में तथ्य परकता कलात्मक आदि तत्व समान रूप से रहते हैं। रिपोर्ताज घटना स्थलों तक ही सीमित रहता है जब कि ये घटना स्थल यात्रा-वृत्त के अंग मात्र होते हैं। रिपोर्ताज किसी महत्वपूर्ण घटना का भावना-सम्पृक्त विवरण होता है जब कि यात्रा-वृत्त में ऐसी भावना के लिए स्थान नहीं है। संस्मरणों में भी यात्रा-वृत्त की भाँति अतीत कालीन स्थान , दृश्य एवं घटना रहती है, किन्तु संस्मरण स्थाई स्मृतियों पर आधारित होते हैं और यात्रा-वृत्त सामाजिक स्मृतियों पर। यात्रा-वृत्तों की भाँति संस्मरणों के लिए भौगोलिक , ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अनिवार्य नहीं होती । स्थानीयता, तथ्यात्मकता, आत्मीयता वैयक्तिकता, कल्पना , प्रवणता - लोचकता आदि यात्रा-वृत्त के आवश्यक तत्व हैं।

2- रेखाचित्र :-

----- जब लेखक अपने सम्पर्क में आये व्यक्ति, साहित्य में आयी वस्तु अथवा देखी-भोगी घटना का यथावत लक्ष्य चित्रण शब्द रेखाओं के माध्यम से करता है, तो उसे रेखाचित्र कहते हैं। यथा-श्रीमती महादेवी वर्मा कृत - 'अतीत के चल-चित्र' , 'गिल्लू' डॉ. नगेन्द्र कृत चेतना के बिम्ब , डॉ. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' कृत नयी पीढ़ी, नये चेहरे, भूले चेहरे, जिन्दगी मुस्करायी आदि।

रेखाचित्र शब्द अंग्रेजी के 'स्केच' शब्द का अनुवाद है जो दो शब्दों रेखा और चित्र के योग से बना है।

3–यात्रा एवं संस्मरण :–

"यात्रा–वृत्त यायावर के अनुभव की अभिव्यक्ति है, जिसमें चराचर क्षेत्र के दिग्दर्शन की अनुभूति भरी होती है। यात्री जो कुछ भ्रमण के क्रम में देखता या भोगता है, उसे ही जब वह औरों के सामने भाषा के माध्यम से प्रस्तुत कर देता है, तो यात्रा विवरण बन जाता है। उसके अनुभव क्षेत्र में भौगोलिक विस्तार, प्राकृतिक सौन्दर्य, प्रभावित करने वाले पात्र, प्रसंग सब स्वतः सिमटें चले आते हैं। और यात्रा विवरण में वह उनका उल्लेख करता है। इस प्रकार यात्रा साहित्य का उपजीव्य वास्तविक और अनुभगत प्रसंग ही होता है । "1 इस दृष्टि से यात्रा विवरण का संस्मरण से सीधा सम्बन्ध है। साहित्यिक यायावर अपनी यात्रा का प्रत्येक प्रसंग अपने स्मृति कोष में संस्मरण के रूप में संचित करता चलता है। और उसे सुव्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करता है। जिसमें तथ्यों को वह इस ढ़ग से संजोता है कि परोक्ष रूप से ही सही, वह स्वयं भी केन्द्र में बना रहता है। स्वभावतः उसके विवरण में उसकी अपनी क्रियाएं – प्रतिक्रियाएं भी सम्मिलित होती हैं। उसकी निजी सम्वेदनाएँ और अनुभूतियाँ भी समाविष्ट हो जाती हैं। अन्ततः उसकी अभिव्यक्ति में आत्मीयता भी आ जाती है। जिसके चलते विवरण संस्मरण बन जाता है। उस दृष्टि से यात्रा विवरण संस्मरण या संस्मरणों का वृत्तचित्र ही है। प्रायः यात्रा वृत्तान्त कहने–सुननें या लिखने का आनन्द भी संस्मरण के समान है रोचक और रसपूर्ण होता है। दोनों की बिधि में सामंजस्यपूर्ण एकरूपता है। यही कारण है कि यात्रा विकास को स्वतंत्र साहित्यिक विधा समझकर संस्मरण से भिन्न मानने वाले भी अनायास ही इसके लिए यात्रा–संस्मरण का प्रयोग कर बैठते हैं।" 1 अधिकतर यात्रा साहित्य संस्मरणात्मक होता है ; और उसमें यात्री अपने प्रभावों प्रतिक्रियाओं और संवेदनाओं को महत्व देता है। इसके निवारण के लिए कोई तर्क प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं समझते। अस्तु संस्मरण यात्रा–साहित्य का अनिवार्य उपजेय अंग है। दूसरे शब्दों में यात्रा विवरण से संस्मरण का अस्तित्व अभिन्न है, और उसमें संस्मरण की अन्तर्भुक्ति होती ही है, क्योंकि जीवन भी एक लम्बी यात्रा है– जिसके विभिन्न पड़ाव होते हैं। मार्ग में मिलने वाले लोग और प्रभावित करने वाले प्रसंग होते हैं, जिनके अस्तित्व को स्वीकार करते हुए अभिव्यक्ति की विफलता को वरण करने में ही–

---

1– हिन्दी साहित्य कोषः यात्रा साहित्य , प्रथम पृष्ठ– 608.

सम्पूर्ण संस्मरण तत्व की सृष्टि होती है। ' मेरी जीवन यात्रा ' शीर्षक से राहुल और जानकी देवी की अलग-अलग यात्राएं अथवा शान्ति प्रिय द्विवेदी के 'पथ चिह्न' और फिर महादेवी के ' पथ के साथी ' के नाम निर्दिष्ट प्रसंग जीवन यात्रा के ही संकेत हैं। और भी व्यापक रूप में देवेन्द्र सत्यार्थी की दृष्टि से और कृष्णामुक्त के शब्दों में जरा देखिए अतीत का यह कवि जब कभी अपनी नायिका या नायक की यात्रा का वर्णन करता है, तब वह कोस या दो कोस का वर्णन न करके कहता है-

" इक छन चाली, दोय बन चाली ,
तीजे वहाँ पहूंची, हो-ओ जाय।"

उपर्युक्त पंक्तियां क्या सभ्यता की उस अवस्था का परिचय नहीं देती। जब सड़कें नहीं थीं, और लोगों को सघन वनों से होकर ही अपनी यात्रा का अधिकांश भाग पूरा करना पड़ता था।" 1

इस समय की यात्रा गत कठिनाइयों का लोक मानस पर अंकित यह रूप प्रवृत्या संस्कार संचित संस्मरण का स्वरूप ही है। पुनः संस्मरण सम्बन्धी स्थूल धारणाओं की दृष्टि से भी संस्मरण जड़ स्थिति का विवरण मात्र नहीं होता। यात्रादि के क्रम में मिले लोगों या प्राप्त अनुभवों का मन पर जो प्रभाव पड़ जाता है, उसकी अभिव्यक्ति भी संस्मरण ही है और वैसे ही संस्मरणों में भी यात्रा प्रसंग आ ही सकता है बहुधा संस्मरण का प्रारम्भ किसी यात्रा के उल्लेख से होता है या मध्य में ही कहीं वह प्रसंग बन सकता है, भले ही वह सांकेतिक तथा संदर्भ-सूत्रों को जोड़ने के लिए ही क्यों न हो।

यात्रा-विवरण और संस्मरण अन्योन्याश्रित और अभिन्न है। डॉ. रघुवंश और अजीत कुमार की धारणा है कि-" स्मृति के आधार पर किसी विषय या व्यक्ति के सम्बन्ध में लिखित लेख या ग्रंथ को संस्मरण कह सकते हैं। यात्रा साहित्य भी एक प्रकार से संस्मरण साहित्य ही है।" 2 उपेन्द्र नाथ अश्क के अनुसार भी यह संस्मरण की एक विशेष विधा मात्र है।

यात्रा साहित्य की रचना-प्रक्रिया का सम्बन्ध यायावर की भ्रमणशीलता या घुमक्कड़ी वृत्ति से है घुमक्कड़ी की यह वृत्ति मनुष्य में प्रारम्भ से रही है। और सौन्दर्य बोध की दृष्टि से उल्लास की भावना से प्रेरित होकर यात्रा करने वाले यायावर एक प्रकार से साहित्यिक मनोवृत्ति के माने जा सकते हैं। उनकी मुक्त अभिव्यक्ति को यात्रा-साहित्य कहा जाता है। इसलिए सुदूर वर्ती अतीत काल में ही यात्रा साहित्य के आरम्भ और अब तक के बहुविध विकास के साथ स्वतंत्र साहित्य के रूप में उसकी परिणति को स्वीकार किया जा सकता है। सच तो यह है कि संस्मरण-साहित्य का परिधि में एक अंग के रूप में यात्रा विवरणात्मक संस्मरण या संस्मरणात्मक यात्रा प्रसंग का भी परिगणित किया जाना सम्भव है। परन्तु समस्त यात्रा संस्मरणात्मक ही हो, यह कोई

---

1- धरती गाती है-देवेन्द्र सत्यार्थी, पृष्ठ-119.
2- हिन्दी शब्द कोष, संस्मरण-प्रथम संस्करण पृष्ठ-803.

आवश्यक नहीं है। यात्रा आदि के भीतर संस्मरण हो जाता है। मगर उतना ही जितना भाग उसके भीतर हो सकता है। स्वतंत्र संस्मरण की विधा की प्रतिष्ठा से यात्रा विवरण आदि को अलग रखना ही होगा।

4- डायरी :-

लेखक द्वारा जब अपने दैनन्दिन जीवन में अनुभूत विचारों-उद्वेलन, गहन चिन्तन के लिए विवश कर देने वाले क्षणों की अनुभूति, तिथिवार लिपि बद्ध की जाती है, तब उसे डायरी कहते हैं। डॉ. चन्द्रावती सिंह के अनुसार "डायरी में मनुष्य अपना कच्चा-चिट्ठा लिखता है, अपने को खोल कर व्यक्त करता है। प्रति दिन की छोटी-बड़ी गुप्त और प्रवाह बातें सभी डायरी में लिखी जाती हैं। निर्भीकता से व्यक्ति डायरी में उन घटनाओं का उल्लेख करता है, जिसे वह और कहीं लिखने में संकोच करेगा। इस प्रकार डायरी व्यक्ति का वास्तविक रूप प्रकट करने की श्रेष्ठ साधना कही जा सकती है।"

ज्ञानोदय, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, सारिका, कादम्बिनी, धर्मयुग, कल्पना माध्यम आदि पत्रिकाओं में छपी मोहन राकेश, लक्ष्मी कान्त मेहता, नरकश मेहता, जगदीश नरायण माथुर, रामस्वरूप चतुर्वेदी, रामशेर बहादुर सिंह आदि की डायरी प्रमुख है। इसके अलावा डॉ. धीरेन्द्र वर्मा कृत- ' मेरी कालिज डायरी ' सुन्दर लाल त्रिपाठी कृत दैनन्दिनी तथा सियारामशरण गुप्त द्वारा - लिखित ' दैनिकी ' प्रमुख डायरी रचनाएं हैं।

5- आत्मकथा :-

यह विधा भी जीवनी के समान ही लोक प्रिय है। इसका लेखक स्वयं अपने जीवन की कथा को पाठकों के समक्ष आत्मीयता के साथ रखता है। यह संस्मरणात्मक होती है। लेखक अपने जीवन की विभिन्न परिस्थितियों तथा दशाओं में अपने मानसिक तथा भावात्मक विकास की कहानी कहता है। उसका यह वर्णन उसके जीवन-काल की पारिवारिक, सामाजिक आर्थिक तथा राजनीतिक पृष्ठ भूमि के सम्बन्ध में होता है। वह अपने जीवन में घटी हुई महत्वपूर्ण तथा मार्मिक घटनाओं का ही क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत नहीं करता, वरन अपने जीवन पर पड़े हुए विभिन्न प्रभावों का भी उल्लेख करता चलता है। इसमें लेखक अपने जीवन की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथा सामाजिक घटनाओं पर अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करता है तथा यह भी बताता है कि अपने समय की विचार धारा को उसने क्या निजी योगदान किया है। यह विधा यात्रा साहित्य के लगभग तो नहीं होती है अपितु वह यात्रा की समीपता बनाये रखती चलती है। मूलतः कहा जा सकता है कि जब कोई साहित्यकार अपने ही जीवनवृत्त को क्रमानुसार लिपिबद्ध करता है तो उसे आत्म कथा कहते हैं। श्यामसुन्दर दास कृत " मेरी आत्म कहानी " डॉ. राजेन्द्र प्रसाद कृत- ' आत्मकथा ' डॉ. हरिवंशराय बच्चन द्वारा कृत " क्या भूलूं, क्या याद करूं " आदि कृतियां उत्कृष्ट मानी गयी हैं।

6- जीवनी :-

----- यह साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। जिसमें किसी महापुरुष या विख्यात व्यक्ति के जीवन की घटनाओं, उसके कार्य कलापों तथा अन्य गुणों की आत्मीयता, औपचारिकता तथा गम्भीरता से व्यवस्थित रूप में वर्णन किया जाता है। उसमें व्यक्ति विशेष के जीवन की छोटी से छोटी बात तथा बड़ी से बड़ी बात इस प्रकार वर्णन किया जाती है कि पाठक उसके अन्तरंग जीवन से परिचित ही नहीं होता, बल्कि तादात्म्य स्थापित कर लेती है। जीवनी का जीवन में प्रायः उन स्थानों पर विशेष बल देती है, जिनके द्वारा पाठक प्रेरणा ग्रहण कर अपने जीवन को अधिक उन्नतिशील बनाने में समर्थ हो सके। जीवनी का प्रमाणिक होना आवश्यक है। यह तभी सम्भव है जब जीवनीकार को उस व्यक्ति जीवन के विभिन्न स्वरूपों तथ्यों, तथा घटनाओं का निजी तथा पूर्ण ज्ञान हो।

' आदर्श हिन्दी शब्द कोष ' एवं 'हिन्दी रत्न कोष ' में जीवन चरित्र का अर्थ 'जीवन वृत्तान्त जिन्दगी का हाल ' जीवन वृत्तान्त युक्त ग्रन्थ दिया गया है। 'हिन्दी शब्द सागर ' में जीवनी का अर्थ जीवन भर का वृत्तान्त तथा जीवन चरित्र दिया गया है। अर्थात वह पुस्तक जिसमें किसी महापुरुष के जीवन का समस्त विवरण आदि अन्त तक लिखा हो।

यात्रा-साहित्य में भी लेखक ने अपनी यात्रा के दौरान जो कुछ भी ग्रहण करता है उसी को साहित्य का रूप देने का सार्थक प्रयास करता है। वैसे ही जीवनी में भी होता है जो कि समकालीन तथ्यों को लिपिबद्ध किया जाता है। इस विधा के द्वारा राहुल सांकृत्यायन ने लगभग अपनी पूरी जीवनी का वृत्तान्त ' मेरी जीवन-यात्रा -1,2,3,4,5 के द्वारा पूर्ण कर डाला ' राहुल जी ने जो कुछ लिखा है उसमें अपने तथा समकालीन क्रिया-कलापों को निर्भीकता के साथ प्रस्तुत किया है। इसके अलावा रामविलास शुक्ल कृत ' मैं क्रान्तिकारी कैसे बना ?' डॉ. श्यामसुन्दर दास द्वारा रचित 'मेरी आत्म कहानी ' और वियोगी हरि कृत ' मेरी जीवन प्रवाह ' आदि।

6- जीवनी :-

----- यह साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। जिसमें किसी महापुरूष या विख्यात व्यक्ति के जीवन की घटनाओ, उसके कार्य कलापों तथा अन्य गुणों की आत्मीयता, औपचारिकता तथा गम्भीरता से व्यवस्थित रूप में वर्णन किया जाता है। उसमें व्यक्ति विशेष के जीवन का छोटी से छोटी बात तथा बड़ी से बड़ी बात इस प्रकार वर्णन किया जाता है कि पाठक उसके अन्तरंग जीवन से परिचित ही नहीं होता, बल्कि तादात्म्य स्थापित कर लेता है। जीवनी का जीवन में प्रायः उन स्थानों पर विशेष बल देता है, जिनके द्वारा पाठक प्रेरणा ग्रहण कर अपने जीवन को अधिक उन्नतिशील बनानें में समर्थ हो सके। जीवनी का प्रमाणिक होना आवश्यक है। यह तभी सम्भव है जब जीवनीकार को उस व्यक्ति जीवन के विभिन्न स्वरूपों तथ्यों, तथा घटनाओ का निजी तथा पूर्ण ज्ञान हो।

' आदर्श हिन्दी शब्द कोष ' एवं 'हिन्दी रत्न कोष ' में जीवन चरित्र का अर्थ 'जीवन वृत्तान्त जिन्दगी का हाल 'जीवन वृत्तान्त युक्त ग्रन्थ दिया गया है। 'हिन्दी शब्द सागर ' में जीवनी का अर्थ जीवन भर का वृत्तान्त तथा जीवन चरित्र दिया गया है। अर्थात वह पुस्तक जिसमें किसी[@] महापुरूष के जहवन का समस्त विवरण आदि अन्त तक लिखा हो।

यात्रा-साहित्य में भी लेखक ने अपनी यात्रा के दौरान जो कुछ भी ग्रहण करता है उसी को साहित्य का रूप देने का सार्थक प्रयास करता है। वैसे ही जीवनी में भी होता है जो कि समकालीन तथ्यों को लिपिबद्ध किया जाता है। इस विधा के द्वारा राहुल सांकृत्यायन ने लगभग अपनी पूरी जीवनी का वृत्तान्त ' मेरी जीवन-यात्रा -1,2,3,4,5 के द्वारा पूर्ण कर डाला ' राहुल जी ने जो कुछ लिखा है उसमें अपने तथा समकालीन क्रिया-कलापों को निर्भीकता के साथ प्रस्तुत किया है। इसके अलावा रामविलास शुक्ल कृत ' मै क्रान्तिकारी कैसे बना ?' डॉ. श्यामसुन्दर दास द्वारा रचित 'मेरी आत्म कहानी ' और वियोगी हरि कृत ' मेरी जीवन प्रवाह ' आदि।